102 इबादत किसकी और कैसे ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है
सब तअरीफें अल्लाह तआला के लिए हैं। जो सारे जहान का पालन हार है हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाजिल हो मुहम्मद सल्ल. पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि पर
व बअद।

इबादत किसकी?

अल्लाह और इन्सान का एक तअल्लुक़ यह है कि अल्लाह खालिक (पैदा करने वाला) और इन्साान मखलूक है। दूसरा यह है कि इन्सान अब्द (बन्दा, गुलाम) है और अल्लाह मअबूद है। इन्सान अब्द (गुलाम) होने के नाते इस बात का जिम्मेदार है कि वह अल्लाह की गुलामी (बन्दगी) करे। क्योंकि अल्लाह ही इन्सान का खालिक, मालिक, राज़िक व दाता है तो वही यह हक रखता है कि इन्सान सिर्फ उसी की इबादत करे, उसी का हुक्म माने, उसी के आगे सर झुकाए, उसी से दुआ व फरियाद करे, उसी से मदद मांगे, उसी के लिए नजर व नियाज दे, उसी के लिए कुर्बानी करे ओर उसी से पनाह मांगे। इसलिए कि अल्लाह ने "जिन्नों व इन्सानों को पैदा ही इसलिए किया है कि वोह अकेले अल्लाह की इबादत करें।"(सूरह ज़ारियात – आयत–56) और इर्शादे बारी है – " ऐ लोगों। अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले (के) लोगों को पैदा किया।" (बकरह–आयत–21)

इबादत क्या है?

'इबादत' अरबी जबान का लफज है जिसका मतलब इन्तेहा दर्जे की आजिजी, इन्कसारी, ताबेअदारी, गुलामी और फरमाबरदारी होता है। जबकि 'अब्द' कहते है बन्दे व गुलाम को। बन्दा चूंकि अल्लाह की बन्दगी व इबादत करता है। इसलिए उसे आबिद और अल्लाह को मअबूद कहा जाता है।

इबादत व बन्दगी का यही मतलब है कि इन्सान अपने आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दे। उसी के हुक्म की पैरवी करे और उसके भेजे हुए रसूल के बताए तरीके पर चले उसके हुक्म पर किसी के हुक्म को तरजीह न दे। न अल्लाह के हुक्म की मुख़ालिफत करे और न उसकी ना फरमानी को बरदाश्त करे।

इबादत सिर्फ कुछ ज़ाहिरी आमाल का नाम नहीं है और न ही इबादत का यह मतलब है कि दिन के कुछ लम्हे , जिन्दगी के कुछ हिस्से या कुछ मामलात में अल्लाह के हुक्म को माना जाए। बल्कि यह है कि हमारा चलना फिरना, खाना –पीना, सोना जागना बातचीत करना, कारोबार करना, लोगों से मिलना जुलना और मुहब्बत या नफरत करना यह सब अल्लाह की इबादत हो सकता है बशर्ते कि अल्लाह के तय शुदा अहकाम की रोशनी में उन्हें अन्जाम दिया जाए।

जो इन्सान ख्वाहिशें नफ़स, माल व दौलत, झूटी अनानियत, रियाकारी व शोहरत तलबी और कौम व बिरादरी की मुहब्बत वगैरह

जैसी रूकावटों को पार कर लेता है और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की इताअत व पैरवी करता है दर हकीकत वही मुसलमान (फरमाबरदार) है। वरना किसी गोरे या काले का जबान से कलमा पढ़ लेना और इस्लामी नाम रख लेना कतई इस बात की दलील नहीं है कि उसने अपने पैदा किये जाने का मकसद पा लिया है। और अब वह क़यामत के दिन जन्नत का मुस्तहिक़ बन कर उठेगा।

इबादत कैसे की जाए?

अल्लाह तआला ने इन्सानों तक अपने अहकाम पहुंचाने के लिए हम इन्सानों ही में से कुछ पाक बाज हस्तियों को चुना, जिन्हें नबी व रसूल कहा जाता है। अल्लाह ने अपनी इबादत व इताअत के बारे में जो अहकाम अम्बिया अलैहि को बतलाए। उन्हें शरीअत कहते है।। शरीअत की पाबन्दी ही का नाम इबादत है। जबकि यह ईमान व यकीन कि हमारा मअबूदे हकीकी, आका व मालिक सिर्फ अल्लाह ही है और उसी का हर हुक्म मानना है और उसी के आगे हमें सर झुकाना है, 'दीन' कहलाता है।

असल तौहीद तौहीदे इबादत है ।

इसलिए एक अल्लाह ही की इताअत व फरमाबरदारी की जाए। उसी के आगे रूकूअ व सज्दा किया जाए। उसी के लिए नजर व नियाज दी जाए। उसी के हुक्म व कानून को सर आंखों पर रखा जाए। उसके मुकाबले में न किसी दूसरे की इबादत की जाए और न किसी और का हुक्म व कानून माना जाए। सब किस्म की इबादतें सिर्फ और सिर्फ अल्लाह के लिए की जाए। जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया "जब तुम नमाज पढ़ो तो (तश्हुद में) यह पढ़ा करो – तरजुमा – "मेरी क़ौली, बदनी और माली इबादतें सिर्फ अल्लाह के लिए हैं।" (बुखारी–6328, मुस्लिम'897, इब्ने माजा –899)

जबानी इबादतें

इसमें दुआ, पुकार, फरियाद, मदद व पनाह मांगना , रज़ा चाहना, जिक्र व तअरीफ करना शामिल है –

1. अल्लाह ही से दुआ व फरियाद की जाए–

किसी नेअमत को पाने, तंगी व मुसीबत से निजात चाहने और मुश्किल वक्त में मदद के लिए अल्लाह को पुकारना दुआ कहलाता है। चूंकि अल्लाह ही अकेली ऐसी हस्ती है जो हर वक्त और हर हालत में अपनी मखलूक की पुकार को सुनती, दिलों के अरमान को जानती और उसकी मदद करने की ताकत रखती है। इसी लिए उसी हस्ती का यह हक है कि तंगी व मुसीबत में सिर्फ उसी को पुकारा जाए, उसी के आगे झोली फैलाई जए, उसी से फरियाद की जाए। और उसी से मदद मांगी जाए। कि यह " दुआ ही इबादत की रूह है। " (तिर्मिजी–3125) यानि "दुआ ही इबादत है और जो शख़्स अल्लाह से दुआ न करे अल्लाह उस पर गुस्सा करता है।" (तिर्मिजी–3126)

इर्शादे बारी तआला है "तुम अल्लाह के साथ किसी और को मत पुकारों" (सूरह जिन्न,आयत –18)

और "उस शख्स से ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पुकारे। (उसे) जो क़यामत तक उसकी

दुआ का जवाब न दे सके और न कुबूल कर सके। बल्कि उसकी दुआ से बेखबर भी हो। जब तमाम इन्सानों को हश्र के दिन जमा किया जाएगा तो यह उनके दुश्मन हो जाएंगे और उनकी दुआ व इबादत सब का इन्कार कर देंगे।" (अहकाफ, आयत – 5–6)

"वोह दूसरी हस्तियां जिन्हें लोग अल्लाह के अलावा पुकारते हैं, किसी चीज के भी खालिक(पैदा करने वाले) नहीं बल्कि मखलूक हैं। मुर्दा हैं जिन्दा नहीं है। उन्हें तो यह भी खबर नहीं कि उन्हें कब (दुबारा जिन्दा करके) उठाया जाएगा।" (नहल–आयत–20,21)

"वो लोग जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, तुम्हारी मदद करने की ताकत नही रखते और न ही अपनी मदद आप कर सकते हैं।" (आराफ–आयत–197)

यानि "अल्लाह के सिवा जिस किसी से भी तुम दुआ करते हो वह तो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगर इस काम के लिए वो सब जमा हो जाएं तब भी नहीं और अगर मक्खी उनसे कोई चीज छीन ले जाए तो उससे छुड़ा भी नहीं सकते। पुकारने वाला और जिसे पुकारा जा रहा है दोनों कमजोर व बेबस हैं। (हज्ज, आयत – 73) और यह कि "जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वो तो खजूर की गुठली पर जो बारीक झिल्ली होती है उसके भी मालिक नहीं।" (फ़ातिर, आयत – 13)

खुद अम्बिया अलैहि ने मुसीबत व जरूरत के वक्त सिर्फ अल्लाह ही को मदद के लिए पुकारा जैसे –

1. आदम अलैहि. – (आराफ़, आयत–23)
2. नूह अलैहि. –(नूह, आयत – 26)
3. युनुस अलैहि. – (अम्बिया, आयत–87)
4. अय्युब अलैहि. – (सुआद, आयत– 41)
5. याकूब अलैहि. – (युसुफ़ – आयत–86)
6. ज़करिया अलैहि. – (मरयम, आयत– 4,5)
7. इब्राहीम अलैहि. – (इब्राहीम, आयत– 40,41)

2. सिर्फ़ अल्लाह ही से पनाह मांगना –

अल्लाह किसी शख्स को अगर अपनी पनाह में ले ले तो सारी कायनात मिलकर भी उसे नुक्सान नहीं पहुंचा सकती और किसी को अगर वह नुक्सान पहुंचाना चाहे तो सारी कायनात मिल कर भी उस शख्स को नुक्सान से बचा नहीं सकती । इसलिए मखलूक के शर से सिर्फ अल्लाह की पनाह ली जाए। खुद अल्लाह तआला ने अपने हबीब मुहम्मद सल्ल. को पनाह मांगने के लिए यह दुआ सिखलाई "मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूं, हर उस चीज के शर से जो उसने पैदा की है और अन्धेरी रात के शर से। जब उसका अन्धेरा फैल जाए और गिरह लगा कर उनमें फूंकने वालियों के शर से और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।" (फलक , आयत – 1 से 5)

" मैं लोगो के मअबूद की पनाह में आता हूं। वसवसा डालने वाले (और) पीछे हट जाने वाले के शर से। जो लोगो के सीने में वसवसा डालता है, ख्वाह वह जिन्नातों में से हो या इन्सानों में से।" (नास, आयत – 3 से 6)

3. जिक्र अल्लाह का किया जाए – " ऐ ईमान वालों। अल्लाह का जिक्र बहुत ज्यादा करो और सुबह व शाम उसकी पाकीजगी बयान

करो।" (अहज़ाब, आयत–41,42)

4. कसम सिर्फ अल्लाह की खाई जाए – इसलिए कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया "खबरदार! अल्लाह ने तुम्हें अपने बाप दादा की कसम खाने से मना कर दिया है। जो शख्स कसम खाना चाहे वह सिर्फ अल्लाह की कसम खाए या खामोश रहे।" (बुखारी, 6646)

"जिस शख्स ने लात या उज़्ज़ा (गैरूल्लाह) की क़सम खाई। वह (तौबा करते हुए) "ला इलाहा इल्लललाह" कह ले।" (बुखारी – 6650)

5. तौबा अल्लाह से करे – गुनाह हो जाने के बाद अल्लाह ही से माफी मांगे। क्यों कि वही माफ करने वाला है। "तुम अपने रब की तरफ पलट आओ और उसी के फरमाबरदार बन जाओ।" (जुमर, आयत –54)

6. भरोसा अल्लाह पर करे – " अल्लाह ही पर भरोसा करो, अगर तुम ईमान वाले हो।" (मायदा, आयत– 23)

" जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करता है, अल्लाह उसके लिए काफी हो जाता है।" (तलाक़, आयत– 03)

दिल की इबादतें

1. ईमान व यक़ीन – इन्सान को चाहिये कि "सच्चे दिल से अल्लाह पर, उसके रसूल सल्ल. पर, उसकी किताब (कुरआन) पर जो उसने अपने रसूल पर नाजिल की है और उन किताबों पर जो इससे पहले उसने उतारी हैं, ईमान लाए। जो शख्स अल्लाह का, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और क़यामत के दिन का इन्कार करे तो वह बहुत दूर की गुमराही में जा पड़ा।" (निसाँ, आयत – 136)

2. डर व मुहब्बत – इन्सान को चाहिये कि सबसे ज्यादा अल्लाह से डरे और मुहब्बत भी सबसे ज्यादा उसी से करे। इसलिए कि इर्शादे बारी है " ईमान वाले अल्लाह की मुहब्बत में बहुत सख़्त होते हैं।" (बक़रह, आयत–165) "तुम लोगों से मत डरो। (बल्कि) सिर्फ मुझ ही से डरो।" (माइदा, आयत– 44)

3. ख़ैर व भलाई अल्लाह से चाहे – क्योंकि अल्लाह ही है जो " जिसे चाहे बादशाहत दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील कर दे। वही बेजान से जानदार और जानदार से बे जान को पैदा करता है और जिसे चाहता है बेशुमार रोजी देता है।" (आले इमरान, आयत–26,27)

जिस्मानी इबादतें

1. नमाज़ व क़याम सिर्फ अल्लाह के लिए – क्योंकि इर्शादे बारी तआला है " ऐ नबी सल्ल. । आप फरमा दीजिए कि यक़ीनन मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी और मेरा जीना व मरना सब अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहानों का रब है।" (अनआम, आयत–163)

"नमाजों की हिफाजत करो। खास कर बीच वाली नमाज (अस्र) की और अल्लाह के लिए बा अदब खड़े हुआ करो।" (बक़रह , आयत – 238)

"सहाबा किराम रजि. जब आप सल्ल. को तशरीफ लाता देखते तो खड़े नहीं होते थे। क्योंकि वो जानते थे कि आप सल्ल.

इस कयाम (खड़ा होने) को ना पसन्द करते थे।" (तिर्मिजी–2535) इसलिये "जो शख्स यह पसन्द करे कि लोग उसके सामने तस्वीर की तरह (बेहिस व हरकत और बाअदब) खड़े हो तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" (तिर्मिजी–2536, अबुदाऊद–5229)

2. रूकूअ व सज्दा सिर्फ अल्लाह के लिए –

इर्शादे बारी है "ऐ ईमान वालों। रूकूअ व सज्दे करते रहो और अपने रब की इबादत में लगे रहो।" (हज्ज, आयत–77) दिन व रात और सूरज व चांद अल्लाह की निशानियों में से है। तुम चांद व सूरज को सज्दा न करो। बल्कि सज्दा उसके लिए करो जिसने इन्हें पैदा किया है। अगर तुम एक अल्लाह की बन्दगी करने वाले हो तो गैरूल्लाह को सज्दा मत करो।" (फुसिलत, आयत– 37)

अल्लाह के अलावा किसी और के लिए झुकना या सज्दा करना किसी तरह भी जाइज नही। अगर तअजीम की नीयत से किया जाए तो गुनाहे कबीरा है और अगर इबादत की नीयत से हो तो फिर शिर्के अकबर है।

क़ब्रों पर सज्दा करना हराम है –

आप सल्ल. ने फरमाया –

1. लोगों । तुम से पहली उम्मतों ने अपने नबीयों और वलीयों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था। खबरदार! तुम ऐसा न करना।" (मुस्लिम –1188)

2. क़ब्रों पर न बैठो और न ही उनकी तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ो।" (मुस्लिम–2250, अबु दाऊद–3229)

3. "बेशक! बदतरीन लोग वोह होंगे जिनकी जिन्दगी में कयामत कायम होगी और वोह ऐसे लोग होगे जो क़ब्रो को सज्दागाह बना लेगें।" (अहमद–4342)

3. तवाफ व एतेकाफ सिर्फ अल्लाह के लिए –

अज्र व सवाब की नीयत से किसी खास जगह के गिर्द चक्कर लगाना 'तवाफ' और इसी नीयत से किसी खास जगह पर मखसूस मुद्दत के लिए बैठना (ठहरना)'एतेकाफ' कहलाता है। इर्शादे बारी है "हमने इब्राहीम अलैहि. और इस्माईल अलैहि. से वादा लिया कि तुम मेरे घर (कअबा) को तवाफ करने वालों, एतेकाफ करने वालों, रूकूअ व सज्दा करने वालों के लिए पाक व साफ रखों" (बकरह, आयत– 125)

4. हज व रोज़ा भी सिर्फ अल्लाह के लिए –

"अल्लाह का यह हक़ है कि जो कोई इस घर (कअबा) तक पहुंचने की ताकत रखे। वह इस घर के हज केलिए हाजिर हो।" (आले इमरान, आयत – 97) और "तुम में से जो कोई भी रमजान का महीना पाए तो उसे चाहिये कि रोजे रखे।" (बकरह, आयत– 185) — ऐ ईमान वालों। तुम पर रोजे फर्ज किये गए।" (बकरह, आयत– 183)

अब अगर कोई शख्स अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को राज़ी करने के लिए रोज़ा रखे या बैतुल्लाह के अलावा कहीं और हज के लिए जाए तो उसका यह अमल शिर्क होगा।

माली इबादतें

नजर व नियाज सिर्फ अल्लाह के लिए – 'नज़र' अरबी

जबान का लफज है। इसे उर्दू में मन्नत और फारसी में नियाज़ कहा जाता है। यह इबादत की वह किस्म है जिसे कोई शख्स अपने ऊपर लाजिम कर लेता है। जैसे अगर मेरा यह काम हो गया तो मैं इतने नवाफिल पढूंगा या इतना सदका करूंगा या इतने रोजे रखूंगा वगैरह। अगर कोई अल्लाह के अलावा किसी और की नज़र (मन्नत) माने और नज़रो नियाज़ दे। तो उसका यह अमल उस (गैरूल्लाह) की इबादत कहलाएगा।

आप सल्ल. ने फरमाया "एक शख्स मक्खी की वजह से जन्नत मे गया और एक (दूसरा) शख्स एक मक्खी ही की वजह से जहन्नम में दाखिल हुआ। वह ऐसे कि पहले जमाने मे दो शख्स एक इलाके से गुजरे। वहां लोगो ने एक बुत रखा हुआ था। जब तक उस पर चढावा न चढ़ाया जाता। कोई वहां से गुजर न सकता था। उन लोगो ने इन दोनों से भी कहा कि चढ़ावा चढ़ाओं तो वोह बोले कि हमारे पास कुछ नहीं है। लोगों ने कहा कि कुछ तो चढ़ाना ही पड़ेगा, ख़्वाह एक मक्खी ही क्यों न हो। एक ने मक्खी का चढ़ावा चढ़ाया और वहां से गुजर गया। यह तो (अपने इस अमल की वजह से) जहन्नम मे गया। दूसरा बोला कि मैं तो अल्लाह के अलावा किसी के लिए कोई नज़राना नहीं दूगा हत्ता कि मक्खी भी नहीं। तो लोगो ने उसे कत्ल कर दिया और वह जन्नत में जा पहुंचा।" (अहमद–किताब जुहद, सफ़ा–15)

अगर गैरूल्लाह के लिए एक मक्खी का चढ़ावा जहन्नम में पहुंचा सकता है तो मुर्गों, बकरो और लाखों रूपयों का चढ़ावा कितना नुक्सान पहुंचा सकता है? जबकि गैरूल्लाह के लिए नियाज दी जाने वाली चीज भी खाना ऐसा है जैसे कोई मुर्दार या सूअर को खाना।" (माइदा,आयत–03)

2. कुर्बानी सिर्फ अल्लाह के लिए –

चूंकि कुर्बानी करना भी इबादत है। इसलिए अगर अल्लाह के सिवाए किसी और को राजी करने के लिए जानवर जिब्ह किया जाए तो यह उसकी इबादत और अल्लाह के साथ शिर्क होगा। क्योंकि इर्शादे बारी तआला है कि "अपने रब के लिए नमाज पढ़ो और (उसी के लिए) कुर्बानी करो।" (कौसर, आयत– 02) "तुम्हारे लिए हराम है मुर्दार, खून, सूअर (का गोश्त) और जिस पर गैरूल्लाह का नाम पुकारा जाए।" (माइदा, आयत–03, अनआम–आयत–145)

"वह चीज न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो।" (अनआम, आयत–21) रसूल सल्ल. ने फरमाया "अल्लाह ने चार (तरह के) लोगों पर लअनत फरमाई है उनमें से एक वह है जो अल्लाह के अलावा किसी और के लिए जानवर जिब्ह करे।" (मुस्लिम–5124, नसाई–4427)

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें किसी भी तरह की इबादत गैरूल्लाह के लिए करने से महफूज रखे। जाने अन्जाने जो गुनाह हमसे हुए हैं उन्हें माफ करें और अपने दीन के सीधे रास्ते पर चलाए। आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214836639, 9887239649